कडु के कृषिकरण एवं मार्केटिंग पर कुल्लू मे प्रशिक्षण पर रिपोर्ट

Report on Training on cultivation and marketing of Kadu

भा॰वा॰अ॰शि॰प॰-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा जाईका जड़ी बूटी सेल हिमाचल प्रदेश वन विभाग से वित्तपोषित सामान्य हित समूहों को औषधीय पौधे उगाने हेतु हैंडहोल्डिंग एवं कौशल विकास परामर्श परियोजना के तहत कुल्लू वन्य जीव मण्डल के जड़ी बूटी सेल के तहत बनाए गए धारा कोट (कुल्लू) के समूह को 19 फरवरी 2026 को कडू उगाने, संरक्षण और इसके विपणन पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया ।

कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं समूह समन्वयक (अनुसंधान) द्वारा मुख्य अतिथि श्री संदीप शर्मा, अरण्यपाल कुल्लू, श्री राजेश शर्मा, डीएफओ (वाइल्ड लाइफ) कुल्लू, श्री एंजल चौहान, डीएफओ कुल्लू तथा वन विभाग के अन्य स्टाफ एवं प्रशिक्षण प्रतिभागियों के स्वागत के साथ हुआ। डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान, प्रशिक्षण समन्वयक एवं परामर्श परियोजना अन्वेषक ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी । उन्होने कहा कि परा मर्श परियोजना का उद्देश्य सामान्य हितधारक समूहों को कडू उगाने के बारे में हैंड होल्डलिंग स्पोर्ट एवं कौशल विकास करना है ।

इसी कड़ी में आदि ब्रहमा सामान्य हितधारक समूह, ओम सिंहमल स्वयम सहायता समूह, किसानो, वन्यजीव मण्डल कुल्लू एवं जाइका स्टाफ के लिए प्रशिक्षण द्वारा जानकारी दी । मुख्य अतिथि श्री संदीप शर्मा, अरण्यपाल कुल्लू ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षकों द्वारा प्राप्त जानकारी को व्यावहारिक प्रयोग में लाकर औषधीय पौधों की खेती करने की सलाह दी और उन्होंने कहा कि हमें अपने उपलब्ध प्राकृतिक उत्पादों की वैज्ञानिक दृष्टीकोण के अनुसार सही मूल्यांकन करवाने और उसकी जानकारी प्राप्त कर अपना लाभ प्रतिशत बढ़ा सकते हैं । उन्होने कहा कि जो औषधीय पौधे स्थानीय लोगों द्वारा साधारण समझे जाते हैं वे वास्तव में असाधारण हैं, यह पौधे यहीं उग सकते हैं । उनका वास्तविक मूल्य कहीं अधिक है । उन्होने खाली पड़ी भूमि पर औषधीय पौधे उगाने की सलाह दी । इस संदर्भ में उन्होने कहा कि स्वयं सहयता समूह को औषधीय पौधों की खेती हेतु सरकारी भूमि भी उपलब्ध कारवाई जा सकती है । प्रशिक्षण कार्यक्रम तभी सफल हो सकते हैं अगर प्राप्त जानकारी का उपयोग किया जाए अन्यथा विभाग और सरकार द्वारा किए गए प्रयास का कोई औचित्य नहीं रहता है । लोगों के सहयोग बिना सरकार की किसी भी योजना का वांछित परिणाम नहीं मिल सकता । किसान जड़ी बूटी उगाकर अतिरिक्त आय कमा सकते हैं । श्री राजेश शर्मा, डीएफओ वाइल्ड लाईफ कुल्लू ने प्रतिभागियों को जड़ी बूटियां की खेती में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए आवाहन किया । उन्होने कहा कि इस क्षेत्र में और अधिक जागरुकता फैलाने की आवश्यकता है । उन्होंने आगे कहा कि इससे

जड़ी बूटियों का संरक्षण होगा और साथ-साथ जड़ी बूटी उत्पादक समूह के सदस्य आर्थिक लाभ भी प्राप्त कर सकेंगे । श्री एंजल चौहान, डीएफ़ओ, कुल्लू ने लोगों को जड़ी बूटी उगाने हेतु भूमि उपलब्ध करवाने और उपलब्ध जड़ीबूटियों की उचित मार्केटिंग की आवश्यकता पर बल दिया ।

डॉ संदीप शर्मा वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं समूह समन्वयक अनुसंधान ने कार्यक्रम के आरंभ में संस्थान द्वारा किए गए कार्यों के बारे में बताया और कहा कि संस्थान की टीम किसानों के पास आ कर उनका मार्गदर्शन करेगा । समशीतोष्ण जलवायु में जड़ी बूटियों की खेती मुख्यत कडू के संरक्षण की स्थिति इसकी खेती और मार्केटिंग के बारे में जानकारी दी । उन्होंने कडू के एक पौधे से अधिक पौधे तैयार करने की मैक्रोप्रोलिफरेशन विधि के बारे में प्रतिभागियों को अवगत करवाया और कडू के लिए उचित प्रकार के खेत अथवा स्थान चुनने और संभावित दिक्कतों से निदान पाने हेतु प्रमुख सावधानियां सुझाई । डॉ अश्वनी तपवाल, प्रभाग प्रमुख विस्तार ने ओर्गेनिक खेती के लिए जैव उर्वरक एवं जैव फफूंदनाशक विशेषतः कडु की खेती के बारे में जानकारी दी । उन्होंने आगे कहा कि जैव उर्वरक पौधों की जरूरत का स्थाई समाधान है वह पौधों को पोषक तत्व की कमी वाली भूमि में अच्छे से उगाने व जीवित रहने में मदद करते है । अपने वक्तव्य उन्होने औषधीय पौधों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु ओर्गेनिक खेती की आवश्यकता पर बल दिया । क्योंकि रसायनिक उर्वरक और कीटनाशक आदि औषधीय घटकों को प्रभावित कर सकते हैं । डॉ. जगदीश सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त) ने अतिरिक्त आय हेतु बागवानी फसलों में कडु को मध्यवर्ती फसल के रूप में उगाने के तरीके पर जानकारी दी । डॉ. जोगिंदर चौहान ने इन क्षेत्रों में उगाने वाले उचित पौधों जैसे कि चोरा, वन ककड़ी, निहानी, कुठ इत्यादि की पहचान, उपयोग और महत्व और सतत दोहन के बारे में बताया । उन्होने जड़ी बूटियों के वैज्ञानिक तरीके से सतत दोहन की आवश्यकता पर बल दिया । उन्होने कहा कि 70% से अधिक जड़ीबूटियाँ विनाशक विधि द्वारा अवैज्ञानिक ढंग से दोहन द्वारा बहुत से औषधीय पोधे आज लुप्त होने के कगार पर हैं । चर्चा एवं व्याख्यान के माध्यम से जानकारी सांझा करने के बाद जड़ी बूटी उगाने वाले समूह सदस्यों को आनस्पॉट कडू उगाने में जो समस्याएं आ रही है उसका निवारण हेतु जरूरी बाते सुझाई गई । सामान्य हितधारक समूहों के सदस्यों, किसानों, वन्यजीव मण्डल कुल्लू एवं जाइका स्टाफ सहित, 50 लोगों ने प्रशिक्षण में भाग लिया । इसके अतिरिक्त इस अवसर पर श्री राजेश ठाकुर एसीएफ़ वाइल्ड लाईफ कुल्लू, प्रिया ठाकुर एस एम एस एवं संस्थान से कुलवंत राय गुलशन एवं राजेन्द्र पाल भाटिया भी उपस्थित रहे । प्रिया ठाकुर एस एम एस एवं संस्थान से कुलवंत राय गुलशन एवं राजेन्द्र पाल भाटिया ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

ICFRE-Himalayan Forest Research Institute, Shimla, organized a training and demonstration program on 19 February 2026 for Adi Brahma common interest group of Dhara Kot, Kullu Wildlife Division under the *Jadi Buti Cell* JICA, Himachal Pradesh Forest Department and for Om Singhamal Self-Help Group, farmers, Kullu Wildlife Division staff, and JICA staff.. The program was conducted under the project titled *"Handholding and Skill Development Consultancy for Cultivation of Medicinal Plants for Common Interest Groups."* which focused on the cultivation, conservation, and marketing of Kaddu

At the outset, Dr. Joginder Singh Chauhan, Training Coordinator and Project Investigator, briefed the participants about the consultancy project. Dr. Sandeep Sharma, Senior Scientist and Group Coordinator (Research), who welcomed the Chief Guest Shri Sandeep Sharma, Conservator of Forests, Kullu; Shri Rajesh Sharma, DFO (Wildlife), Kullu; Shri Angel Chauhan, DFO Kullu; other distinguished Forest Department officials; and training participants. Chief Guest Shri Sandeep Sharma, Conservator of Forests, Kullu, advised participants to apply the knowledge gained during training in practical cultivation of medicinal plants. He emphasized that by scientifically assessing locally available natural products and obtaining proper information, farmers can increase their profit margins. He noted that many medicinal plants considered ordinary by local people are actually extraordinary, grow locally, and have much higher real value. He encouraged cultivation of medicinal plants on vacant land and mentioned that government land could also be made available to Self-Help Groups for medicinal plant cultivation. He stressed that training programs are successful only when the knowledge gained is implemented; otherwise, the efforts of the department and government lose significance. Without public cooperation, no government scheme can achieve desired results. He added that farmers can earn additional income through medicinal plant

cultivation. Shri Rajesh Sharma, DFO Wildlife Kullu, urged participants to actively engage in medicinal plant cultivation and emphasized the need for greater awareness in the region. He stated that such efforts would ensure conservation of medicinal plants while also providing economic benefits to producer groups. Shri Angel Chauhan, DFO Kullu, highlighted the need to provide land for cultivation and ensure proper marketing of available medicinal plants.

Dr. Sandeep Sharma, Senior Scientist and Group Coordinator (Research) shared information about the institute's work and assured that the institute's team would visit farmers to guide them. He provided detailed information on cultivation, conservation status, and marketing of Kadu in temperate climates. He also explained the macro-proliferation method to produce multiple plants from a single kadu plant and suggested precautions in selecting suitable fields or sites and addressing potential challenges. Dr. Ashwani Tapwal, Head of Extension Division, provided information about bio-fertilizers and bio-fungicides for organic farming, especially for kadu cultivation. He stated that bio-fertilizers offer a sustainable solution for plant nutrition and help plants grow and survive in nutrient-deficient soils. He emphasized the importance of organic farming to ensure the quality of medicinal plants, as chemical fertilizers and pesticides may affect medicinal properties. Dr. Jagdish Singh, Senior Scientist (Retired), shared methods of cultivating kadu as an intercrop with horticultural crops to generate additional income. Dr. Joginder Chauhan discussed about identification, uses, importance, and sustainable harvesting of suitable medicinal plants grown in the region, such as Chora, Van Kakri, Nihani, and Kuth. He emphasized the need for scientific and sustainable harvesting practices and told that more than 70% of medicinal plants are being harvested destructively and unscientifically, pushing many species toward extinction.

After discussions and lectures, on-the-spot solutions were provided to address problems faced by medicinal plant growers in cultivating kadu. A total of 50 participants, including members of Common Interest Groups, farmers, Kullu Wildlife Division staff, and JICA staff, attended the training. Additionally, Shri Rajesh Thakur (ACF Wildlife Kullu), Priya Thakur (SMS), and Kulwant Rai Gulshan and Rajendra Pal Bhatia from the institute were also present on the occasion. Priya Thakur (SMS), along with Kulwant Rai Gulshan and Rajendra Pal Bhatia from the institute, played an important role in the successful organization of the training program.

Important Medicinal Plants for different agro-climatic zones of temperate Himalayas
Lower Hills
Trees:
Herbs:

Cultivation of Important High Altitude Medicinal and Aromatic Plants: With Special Reference to Picrorhiza kurrooa (Kadu) An Option for Diversification and Augmentation of Rural Income
Dr. JAGDISH SINGH, Scientist- G (Rtd)
Himalayan Forest Research Institute

Media Coverage

50 को दी कडू की खेती पर ट्रेनिंग

कुल्लू में विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को किया जागरूक

दिव्य हिमाचल ब्यूरो-कुल्लू

कुल्लू में कडू की खेती व मार्केटिंग पर विशेष प्रशिक्षण 50 प्रतिभागियों ने लिया हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा जाईका जड़ी बूटी सेलए हिमाचल प्रदेश वन विभाग के वित्तपोषण से संचालित ;सामान्य हित समूहों को औषधीय पौधे उगाने के लिए हैंडहोल्डिंग एवं कौशल विकास परामर्श परियोजना के तहत कुल्लू वन्यजीव मंडल के धारा कोट कुल्लू में कडू ;औषधीय पौधा की खेती, संरक्षण और विपणन विषय पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रशिक्षण समन्वयक एवं परामर्श परियोजना अन्वेषक डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान ने बताया कि इस परियोजना का उद्देश्य सामान्य हितधारक समूहों को कडू की वैज्ञानिक खेती, संरक्षण तथा विपणन के लिए तकनीकी मार्गदर्शन और कौशल विकास प्रदान करना है। प्रशिक्षण में आदि ब्रह्मा सामान्य हितधारक समूह, ओम सिंहमल स्वयं सहायता समूह, किसान, वन्यजीव मंडल कुल्लू एवं जाईका स्टाफ के सदस्य शामिल हुए। मुख्य अतिथि अरण्यपाल कुल्लू संदीप शर्मा ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षकों से प्राप्त जानकारी को व्यवहार में लाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि स्थानीय स्तर पर उपलब्ध औषधीय पौधों का वैज्ञानिक मूल्यांकन कर उनकी सही मार्केटिंग से आय में वृद्धि सं है। खाली पड़ी भूमि पर औषधीय पौधे उगाने की सलाह देते हुए कहा स्वयं सहायता समूहों को आवश्यकता अनुसार सरकारी भूमि भी उपलब्ध करवाई जा सकती है।

कुल्लू : सेमिनार के दौरान उपस्थित अधिकारी एंव किसान

बाइक की टक्कर से

मिल चुका है जबकि अब बजट मिलना विदेश से आने वाले सैलानियों के लिए योजना बनाई है। संवाद

लोगों को कडू उगाने, संरक्षण और विपणन का दिया प्रशिक्षण

कुल्लू। वन विभाग से वित्त पोषित जायका जड़ी-बूटी सेल ने वीरवार को कुल्लू में लोगों को कडू उगाने, संरक्षण और इसके विपणन पर प्रशिक्षण किया। प्रशिक्षण समन्वयक एवं परामर्श परियोजना अन्वेषक डॉ. जोगिंद्र सिंह चौहान ने कहा कि आदि ब्रह्मा सामान्य हितधारक समूह, ओम सिंहमल स्वयं सहायता समूह को कडू उगाने के बारे में परामर्श दिया गया है। वहीं कडू के संरक्षण की स्थिति, खेती और मार्केटिंग के बारे में बताया गया। संवाद

दिव्य हिमाचल
देवभूमि का सर्वाधिक लोकप्रिय मीडिया

50 को दी कद्दू की खेती पर ट्रेनिंग

By: teamit Feb 20th, 2026 12:59 am

कुल्लू में विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को किया जागरूक

दिव्य हिमाचल ब्यूरो-कुल्लू

कुल्लू में कड्डू की खेती व मार्केटिंग पर विशेष प्रशिक्षण 50 प्रतिभागियों ने लिया हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा जाईका जड़ी बूटी सेलर हिमाचल प्रदेश वन विभाग के वित्तपोषण से संचालित श्सामान्य हित समूहों को औषधीय पौधे उगाने के लिए हैंडहोल्डिंग एवं कौशल विकास परामर्श परियोजना के तहत कुल्लू वन्यजीव मंडल के धारा कोट कुल्लू में कड्डू ;औषधीय पौधा की खेती, संरक्षण और विपणन विषय पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रशिक्षण समन्वयक एवं परामर्श परियोजना अन्वेषक डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान ने बताया कि इस परियोजना का उद्देश्य सामान्य हितधारक समूहों को कड्डू की वैज्ञानिक खेती, संरक्षण तथा विपणन के लिए तकनीकी मार्गदर्शन और कौशल विकास प्रदान करना है।

प्रशिक्षण में आदि ब्रह्मा सामान्य हितधारक समूह, ओम सिंहमल स्वयं सहायता समूह, किसान, वन्यजीव मंडल कुल्लू एवं जाईका स्टाफ के सदस्य शामिल हुए। मुख्य अतिथि अरण्यपाल कुल्लू संदीप शर्मा ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षकों से प्राप्त जानकारी को व्यवहार में लाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि स्थानीय स्तर पर उपलब्ध औषधीय पौधों का वैज्ञानिक मूल्यांकन कर उनकी सही मार्केटिंग से आय में वृद्धि संभव है। खाली पड़ी भूमि पर औषधीय पौधे उगाने की सलाह देते हुए कहा स्वयं सहायता समूहों को आवश्यकता अनुसार सरकारी भूमि भी उपलब्ध करवाई जा सकती है।

कडु के कृषिकरण को उगाने एवं मार्केटिंग पर कुल्लू में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

कुल्लू, (आपका फैसला)। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा जाईका जड़ी बूटी सेल हिमाचल प्रदेश वन विभाग से वित्तपोषित सामान्य हित समूहों को औषधीय पौधे उगाने हेतु हैंडहोल्डिंग एवं कौशल विकास परामर्श परियोजना के तहत कुल्लू वन्य जीव मंडल के जड़ी बूटी सेल के तहत बनाए गए धारा कोट (कुल्लू) के समूहों को 19 फरवरी 2026 को कडू उगाने, संरक्षण और इसके विपणन पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया। डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान, प्रशिक्षण समन्वयक एवं परामर्श परियोजना अन्वेषक ने कहा कि यह परामर्श परियोजना जड़ी बूटी सेल जाईका, वन विभाग हिमाचल प्रदेश द्वारा वित्त पोषित की गई है । जिसका उद्देश्य सामान्य हितधारक समूहों को कडू उगाने के बारे में हैंड होल्डलिंग स्पोर्ट एवं कौशल विकास करना है । इसी कड़ी में आदि ब्र्हमा सामान्य हितधारक समूह, ओम सिंहमल स्वयम सहायता समूह, किसानो, वन्यजीव मण्डल कुल्लू एवं जाइका स्टाफ के लिए प्रशिक्षण द्वारा जानकारी दी । मुख्य अतिथि श्री संदीप शर्मा, अरण्यपाल कुल्लू ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षकों द्वारा प्राप्त जानकारी को व्यावहारिक प्रयोग में लाकर औषधीय पौधों की खेती करने की सलाह दी और उन्होंने कहा कि हमें अपने उपलब्ध प्राकृतिक उत्पादों की वैज्ञानिक दृष्टीकोण के अनुसार सही मूल्यांकन करवाने और उसकी जानकारी प्राप्त कर अपना लाभ प्रतिशत बढ़ा सकते हैं।इस अवसर पर श्री राजेश ठाकुर एसीएफ़ वाइल्ड लाईफ कुल्लू, प्रिया ठाकुर एस एम एवं संस्थान से कुलवंत राय गुलशन एवं राजेन्द्र पाल भाटिया भी उपस्थित रहे।

Video Home Live Reels Explore

****